कभी सोचा न था हमने ...

कभी सोचा न था हमने, कृपा मो पे ऐसी हो जायेगी
बसाएंगी हमें बृज में हमारी राधिका रानी ।।

छूट गई म्हारी गाँव की गलियाँ,
बाग़ बगीचा म्हारा फूल वो कलियाँ
छूटी दुनिया प्राण न छूटा, प्राण बसा म्हारा वृंदावन में ।।1।।

जप न किया न किया कोई साधन,
भजन बिना म्हारा बीता यौवन,
संत दरस नहीं पाये मैंने, संत मिले मोहे वृंदावन में ।।2।।

जमुना किनारा कदम की छईयाँ,
बंसीवट की शीतल छैंया,
बृज रज तज म्हारी जाये बलैंयां, अब म्हारी कुटिया वृंदावन में ।।3।।

मात पिता के भजन के बल सौं
और गुरू चरणन की पद रज सौं
'गोविंददास' की आस पूरण भई, वास मिलौ मोहे वृंदावन में ।।4।।

http://www.govindbhargav.in